गुरुकुल कांगड़ी संग्रहालय में संग्रहीत पुरातात्विक "अवशेषों का ऐतिहासिक परिपेक्ष्य में अध्ययन"

प्राचीन भारतीय इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्व विभाग में

बी० ए० तृतीय वर्ष की संग्रहालय एवं पुरातत्व विज्ञान के
पाठ्य क्रमानुसार परीक्षा हेतू प्रस्तुत

लघु शोध-प्रबन्ध

1997

निर्देशक :
डॉ० प्रभात कुमार सैंगर
प्राचीन भारतीय इतिहास, संस्कृति
एवं पुरातत्व विभाग

प्रस्तुत कर्ता :
नरेन्द्र कुमार सिंह
बी० ए० तृतीय वर्ष

96

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय,
हरिद्वार

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

96m

पुस्तकालय
गुरुकुल काँगड़ी विश्वविद्यालय
विषय संख्या _____ आगत नं० 02702
लेखक सिंह नरेन्द्र
शीर्षक प्राचीन भारतीय इतिहास
संस्कृति एवं पुरातत्वविज्ञान

नाँक	सदस्य संख्या	दिनाँक	सदस्य संख्या

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय
कृपया पुस्तक के ऊपर कोई निशान आदि न लगायें।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

पुस्तकालय
गुरुकुल काँगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार
वर्ग संख्या 954
आगत संख्या 102702
पुस्तक वितरण की तिथि नीचे अंकित है। इस तिथि सहित ३०वें दिन तक यह पुस्तक पुस्तकालय में वापिस आ जानी चाहिए अन्यथा ५० पैसे प्रति दिन के हिसाब से विलम्ब-दण्ड लगेगा।

गुरुकुल क

"अवशेषों

प्राचीन भार

बी० ए०

DONATION

निदेशक :
डॉ० प्रभात कुमार सेंगर
प्राचीन भारतीय इतिहास, संस्कृति
एवं पुरातत्व विभाग

प्रस्तुत कर्ता :
नरेन्द्र कुमार सिंह
बी० ए० तृतीय वर्ष

102702

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय,
हरिद्वार

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

गुरुकुल कांगड़ी संग्रहालय में संग्रहीत पुरातात्विक

"अवशेषों का ऐतिहासिक परिपेक्ष्य में अध्ययन"

DONATION

प्राचीन भारतीय इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्व विभाग में

बी० ए० तृतीय वर्ष की संग्रहालय एवं पुरातत्व विज्ञान के
पाठ्य क्रमानुसार परीक्षा हेतू प्रस्तुत

पुस्तकालय
गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय

लघु शोध-प्रबन्ध

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय स्थापना 1870 विक्रमाब्द

102702

1997

निदेशक :
डॉ० प्रभात कुमार सेंगर
प्राचीन भारतीय इतिहास, संस्कृति
एवं पुरातत्व विभाग

प्रस्तुत कर्ता :
नरेन्द्र कुमार सिंह
बी० ए० तृतीय वर्ष

102702

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय,
हरिद्वार

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

Th
96 M
5

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

प्राक्कथन :-

संग्रहालय एक ऐसा स्थान है जहाँ मानव और प्रकृति के पारस्परिक सम्बन्धों का अ
अध्ययन किया जाता है। संग्रहालय दो शब्दों से मिलकर बना हुआ है। जैसे जैसे
संग्रह-अलयम । संग्रहालय का अर्थ वस्तुओं को इकट्ठा करने से है तथा आलय का
अर्थ घर से होता है। संग्रहालय भी अंग्रेजी के म्युजियम शब्द का हिन्दी रूपान्तरण
है।

आज यह संग्रहालय तीर्थ नगरी हरिद्वार में आने वाले दर्शकों शोधार्थियों
तथा कला एंव प्राचीन अतिहास में रूंच रखने वाले अध्यताओं का विशेष आकर्षण का
केन्द्र बना हुआ है। आज सभी देशों में विभिन्न प्रकार के संग्रहालयों की स्थापना की
गयी है। संग्रहालय ऐतिहासिक धरोहरों का केन्द्र है।

यह लघु शोध प्रबन्ध लिखने कोप्रेरणा परम पुज्यनीय गुरूदेव ७ठ० श्री प्रभात सिंह
सेंगर से मिली । जिनके सहयोग से एंवम निर्देशन में यह कार्य अल्प समय में पूरा हुआ
साथ ही पुरात'व संग्रहालय के कर्मचारियों का समय - समय पर सहयोग मिलता रहा है।
जिनके प्रतिमय हार्दिक अभिनन्दिन करता हूँ।

प्रस्तुत कर्ता

नरेन्द्र कुमार सिंह

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

विषय-सूची

क्रम संख्या	विषय
1.	पुरातत्व संग्रहालय का परिचय
2.	आद्य ऐतिहासिक कक्ष
3.	पाषाण प्रतिमा कक्ष
4.	मुद्रा कक्ष एंव हिमालय दर्शना चित्र विथिका
5.	चित्र कला कक्ष
6.	मृण मूर्ति संग्रह कक्ष
7.	अष्ट धातु प्रतिमा कक्ष
8.	श्रद्धानन्द कक्ष
9.	अस्त्र शस्त्र अनुभाग
10.	पाण्डु लिपि कक्ष
11.	नृतत्व शास्त्र से सम्बन्धित कक्ष
12.	वर्तमान कार्यरत कर्मचारी एंव अधिकारीगण

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

पुरातत्व संग्रहालय का परिचय

गुरूकुल कला कांगड़ी विश्वविद्यालय के संस्थापक स्वामी श्रद्धानंद ने संग्रहालय की उपयोगिता उतना महत्व प्रदान किया जितना गुरूकुलीय शिक्षा को । परिणाम स्वरूप गुजरा वाले से गुरूकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय कांगडी ग्राम मे स्थापित की गयी तथा आस पास के क्षेत्र मे विखरे हुए पुरावस्तुओं का संग्रह करके सन 1907 मे संग्रहालय की स्थापना गुरूकुल परिसर मे की गयी ।संग्रह का क्षेत्र आस पास ही नही रहा अपितु स्वामी जो ने भारत तथा विदेशो से भी पुरावस्तुओ का संग्रह करते रहे । गुरूकुल संग्रहालय के विकास मे देशी तथा विदेशी मित्रो का सहयोग प्राप्त होता रहा प्रथम विश्व युद्ध के समय जर्मन युद्धपोत तथा एडमन द्वारा किये गया मद्रास बन्दर गाह के हमले मे उपयोगित सामग्रियो का भी संग्रह प्राप्त हुआ है । सन 1924 मे गंगा मे आयी बाढ के कारण गुरूकुल के साथ संग्रहालय की समृद्धि को भी काफी नुकासान उठाना पडा ।परिणामत जो कुछ बचा था उसे भंडारन के अन्तर्गत रख दिया गया वतमान समय मे जहा गुरूकुल कांगडी विश्वविद्यालय स्थित है वही पर पुरातत्व संग्रहालय की स्वापात किया गया ।

सन 1947 मे तत्कालीन शिक्षा मंत्री डा0 सम्पूर्णानंद ने प्रदेश के सार्वजनिक संग्रहालयो के विकास के उददेश्य से एक समिति का गठन किया हरिद्वार नगर की प्राचीनता एवं गौरव को ध्यान मे रखते हुए सदस्यो ने एक पुरातत्व संग्रहालय की स्थापना के लिए प्रार्थना किया गुरूकुल कांगडी के तत्कालीन कुलपति आचार्य इन्द्रजी ने इन विचारोसे सहमत होकर पुरावस्तुओ का संयोजन वेद मंदिर के प्रथम तल पर करवया तथा पुरातत्व संग्रहालय के निदेशक पद के लिए डा हरिदत्त जो को न्युक्त किया इसका विधिवत उदघाटन कला वेत्ता डा वासुदेवशरण अग्रवाल ने किया । प्रत्यक्ष ज्ञान का मंदिर जनसामान्य तथा विद्यार्थियो के लिये समर्पित किया गया ।

प्रारम्भ मे केवल चार विथिकाये ही प्रर्दशित की गयी थी । यथा मुर्तिविभाग 2 कला विभाग मुद्रा विभाग 4 सन 1982 के सत्र मे संग्रहालय वर्तमान भवन मे स्थान्तरित किया गया । नये भवन की आधार शिला तत्त कालीन मुख्यमत्री डा0 सम्मपूर्णानंद ने रखी थी ।संग्रहालय के विकास मे पंडित इन्द्रविद्यावास्पति , सत्यव्रतजी , आचार्य प्रियवतजी ,श्री वल्भकुमार हुजा, डा जबर सिंह सेगर एवं डा0श्यामनारायण का योगदान विशेष रूप से स्मरोयण है ।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

आद्यऐतिहासिक कक्ष

इस गैलरी का उदघाटन १अप्रैल १९९५ को लोकसभा अध्यक्ष श्री शिवराज पाटिल ने किया था इस गैलरी मे सिन्धु सभ्यता से सम्बधित पुरावस्तुओ को जनसामान्य के लिये प्रदर्शित है । जिसमे मुख्य रूप से पाषाण प्रतिमाये , हस्त निर्मित मृण्मूर्तियो को प्रदर्शित किया गया है ।

काले रंग की नर्तकी की मूर्ति कला की उत्कृष्ट उदाहरण हे जिसके गले मे एक हार है । इसके अतिरिक्त मोहनजोदडो से प्राप्त मृण्मूर्ति मे मातृदेवी की प्रतिमा अपना विशेषस्थान रखती है यद्यपि कला की दृष्टि से यह महत्वपूर्ण नही है शरीर सौष्ठव नही है गले मे हार है आख और स्तन अलग से चिपकाये गये है । इसके अतिरिक्त बृषभ कच्छप ,एव विभिन्न पशु की मृण मुर्तियो का संकलन किया गया है । धार्मिक अनुस्थान से संबधित वस्तुओ तथा चाक्ू अनेक मुद्राओ का भी संग्रह किया गया है ।

इसके अतिरिक्त विभिन्न क प्रकार र के मनके ताम्रफलक भाला चित्रित मृदाभाण्ड का / प्रयोजन किया है x अत:यह गैलरी ऐतिहासिक दृष्टि से अत्यन्त महत्वपुर्ण है साथ ही महाभारत काल के मृदाभाण्ड का संग्रह किया गया है सिन्धु सभ्यता से प्राप्त वस्तुओ का संकलन जनसामान्य एवं विद्यार्थियो को लिए संग्रहालय मे सुरक्षित रखा गया है ।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

श्रद्धानन्द कक्ष

गुरूकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के संस्थापक स्वामी श्रद्धानंद जी के जीवन काल से सम्बन्धित सामग्रियों को जनसामान्य के लिये प्रदर्शित किया गया है । स्वामीजी के परदादा का नाम श्री सुखानन्दजी तथा पिता श्री नानक चन्द्रजी थे । स्वामीजी का जन्म सम्वत 1913 को ग्राम तलवन जिला जालंधर मे हुआ था । इनका प्रारम्भिक नाम मंशीराम था । पढ़ने लिखने मे आप बहुत प्रवीण थे । क्वीन्स कालेज से आपने हाइस्कूल की परीक्षा पास की ,परीक्षा जब समाप्त हुइ तो उसेरी समय इनकी माता जी का स्वर्गवास हो गया ।

1877 मे इनका विवाह जालंधर के प्रसिद्ध रइस लाला शालीग्राम की पुत्री शिवदेवी के साथ हुआ । 1880 मे आप ने इस पद से त्याग दे दिया तथा फिल्लौर मे वकालत करने लगे और फिर जालंधर आ गये ।

मुंशीराम पर लाला देवराज का अत्यधिक प्रभाव पड़ा अत: 1885 मे उन्होंने आर्य समाज मे प्रवेश किया । महात्मा मुंशीराम पर पंडित गुरूदत्त का का विद्यार्थी का विशेष प्रभाव पड़ा स्वामी जी ने 1897 मे आर्य प्रत्रिका मे एक लेख प्रकाशित कर 1898 के नवम्बर महीने मेआर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब मे गुरूकुल स्थापित करने का प्रस्ताव पारित कराया ।

स्वामीजी के निकटस्थ मित्र राय ठाकुरदत्त ने लाहौर केपास गुरूकुल खोलना चाहते थे । पर महात्मा जी प्रकृति से ओत प्रोत स्थान पर गुरूकुल स्थापित करना चाहते थे । 1909 मे गुरूकुल कांगड़ी मे गुरूकुल खोलने की अनुमति आर्य सभा ने दे दी तथा 4 मार्च 1902 को गुरूकुल प्रारम्भ हो गयी जिसमे 20 ब्रम्हचारी थे । 1907 मे स्वामी जी ने सन्यास ले लिया

1919 मे अमृतसर के कांग्रेस अधिवेशन के सभापति का पद प्राप्त किया स्वामीजी के इन पवित्र कार्यों से सम्बन्धितउनके जीवनकाल की सामाग्री को संग्रहालय मे सुरक्षित रखा गया है ।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

स्वामीजी ने शुद्धिप्रचार एवं एकता का संदेश दिल्ली के जामा मस्जिद मे भी दिया, उसका एक तैल चित्र प्रदर्शित है । इसी प्रकार स्वामीजी की विभिन्न मुद्राएं लेट हुए , बैठे हुए का

का चित्र प्रदर्शित है । महत्वपूर्ण चित्र 1919 का अमृत सर कांग्रेस अधिवेशन का है ।

जिसमे स्वामीजी स्वागत सभा का अध्यक्ष थे । उनके साथ श्री गोखले श्रीपंडित मदन मोहन ज जो मोतीलाल नेहरू आदि महापुरुष विराजमान है इसके अतिरिक्त स्वामीजी को जब गोली लगी तो मृत्युपरान्त उनकी शव यात्रा मे अपार भीड़ थी उसे भी प्रदर्शित किया गेय है ।सम्भवत: इतना जनसमूह कभी किसी के शवयात्रा मे नही देखा गया जिसमे सभी जातियो के लोग सामिल थे । अगला चित्र स्वामीजी के दाह संस्कार का है जो सारे वातावरण को शांत , मौन एवं अवाक बनाये हुए है । इसके बाद स्वामीजी के साथ लार्डवेम्स फोर्ड के वे चित्र प्रदर्शित है जब उन्होने गुरूकुल का भ्रमण किया था । स्वामीजी के वस्त्र ,खड़ाउ, झोला , कम्बल , कुर्ता, लंगोटी , टोपी आदि उनके मूल रूप मे प्रदर्शित कियागया है ।

जो उनकी सादगी को प्रदर्शित करता है ।

स्वामीजी का ब्रम्हदेश की कुछ कलाकृतिया उपहार स्वरूप प्राप्त ह

हुइ थी वह प्रदर्शित है इसी मे एक सुभाष चन्द्र बोस की मुर्ति भी प्रदर्शित है

स्वामीजी के जीवन संविधित अनेक महत्वपुर्ण पत्रो को भी संग्रहालय मे जनसामान्य के लिये प्रदर्शित किया गया है ।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

पाषाण प्रतिमा कक्ष (मथुरा एवं गान्धार कला ब)

भौगोलिक दृष्टि से यह संग्रहालय हरिद्वार जनपद के ऐसे स्थान मे स्थित है जिसे हरिद्वार की पुण्य भूमि कहा जाता है । यह उत्तरा खन्ड की प्रचीन सांस्कृतिक धरोहर का रक्षक है सांस्कृतिक दृष्टि से यह क्षेत्र इतना महत्वपुर्ण हैकि जहां पुरातन युग से ही गंगा की धारा प्रवाहित हसे रही है ।यहा एक भव्य संस्कृति पनप रही थी जिसके चिन्ह इस संग्रहालय मे सुरक्षित रखी गयी है गुरूकुल के उपवन का यह ज्ञानतरू संग्रहालय पूर्णरूपेण पुजिपित है यह पाषाण प्रतिमरअरे के सन्दर्भ मे अपना विशेष स्थान रखती है इस कला का महत्व इस बात मे कै है किवह मनोमय जगत और भूतमय जगत के मध्य एक सेतु है । इस पुल पर चवढ़करहम जान सकते हैकि मपुष्य ने राष ट्रीय संस्कृति के निर्माण मेएक ओर कितना सोचा था ।और दुसरी तरफकितना निर्माण किया था । कला का यही रहस्य है कि उसमे लोक कह संस्कृतिकी परम्परा की व्याख्या होती है ।

इस संग्रहालय मे सुरक्षित पाषाण प्रतिमाये भी अल्स पुरातात्विक सामाग्री भाति ही क्रय की गयी है ।तथा कुछ उपहार स्वरूप और पुरातात्विक सर्वेक्षण द्वारा प्राप्त हुइ है ।

संग्रहालय मे शुग काल से लेकर मध्य काल की बौद्ध जैन एवं होन्दु परम्परा की कला कृतिया है । संग्रह मे शाहबाद , कन्नौज , कांगड़ी ग्राम , आम्रस्रोत तथा लालढोग ,पान्डुस्रोत झीवहेणी ,सुल्तानपुर मायापुर आदि अन्य समीपवर्ती क्षेत्रो की प्रतिमाये है । प्रदक्ष्णा पथ पर लगे स्तम्भ पर बनी शाल भंजिका की आकृति इसकाल का स्मरण कराती है इन स्थानो से प्रप्त प्रतिमाओ मे मथुरा कला की लगभग 38 प्रतिमासे क्रम कह ग ी है ।ये प्रतिमाये कुषाणकालसे लेकर दसवी शदी तक की है ।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

इनमें अधिकतर कुषाण कालीन है । लाल चित्तदार पत्थर पर उत्कीर्ण की गयी है । प्रतिमायें सौन्दर्य भाव के अतिरिक्त भावभंगिमा तथा शिल्पकारिता की दृष्टि से कला की उत्कृष्ट उदाहरण है । इन प्रतिमाओं मे शीर्षहीन बुद्ध , गजलक्ष्मी , शेषशायी विष्णु , स्तम्भ के सहारे स्त्री ,एकमुखी शिवलिंग आदि की मूर्तियाँ विशेषरूप से उल्लेखनीय है । शीर्षहीन बुद्ध की प्रतिमा लगभग 22 से मी 0 उची है तथा 15 से0 मी0 चौड़ी । महात्मा बुद्ध वस्त्र धारण किये हुये है बुद्ध को सर्वप्रथम पूर्णरूपेण भारतीय मुद्रा मे प्रस्तुत करने का श्रेय मथुरा के शिल्पियो के पक्ष मे जाता है । मथुरा के शिल्पकार बुद्ध की मूर्ति के सौन्दर्य के सम्बन्ध मे उनके आध्यात्मिक भावो को भी प्रदर्शित करने का प्रयास किया है ।गजलक्ष्मी की प्रतिमा 25 ×15 मि0मि0 मथुरा के लाल चित्तदार पत्थर पर उत्कीर्ण तत्कालीन कला का द्योतक है । स्तम्भ के सहारे खड़ी स्त्री की प्रतिमा सम्भवत: यक्षिणी की है ।आनुपातिक शरीर सौष्ठव एवं भावकी दृष्टि से यह प्रतिमा विशेष रूप से दर्शनीय है । एक मुखी शिवलिंग (9×4 सेमी0) की प्रतिमा विशेष रूप से दर्शनीय है । गुप्तकालीन मूर्तियों मे बुद्ध का सिर ,शेषशायी विष्णु की प्रतिमा तथा महात्मा बुद्ध की सिर मथुरा के लाल पत्थर से निर्मित है । घुघराले बाल अधोउन्मीलित नेत्र इस मूर्ति के विशेष रूप से आकर्षण के केन्द्र है । इसके अतिरिक्त भगवान विष्णु शेषशायी पर लेअटे हुये है ।

इस संग्रहालय मे मध्यकालीन मुर्तियोंका उत्तम संग्रह है । ये मूर्तियाँहिन्दुओं के असय वास से संग्रहीत की गयी है । इसको तीन उपभागो मे विभाजित किया गया है ।हिन्दू धर्मसे संबंधित प्रतिमाये 2बुद्ध 3 जैन तीर्थंकारो की मूर्तियां है ।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

हिन्दू धर्म से सम्बन्धित प्रतिमाओ मे विष्णु ,हरिहर ,चतुर्मुख शिव , कुबेर , हनुमान, सिंहवाहिनी दुर्गा , शिव पार्वती ब्रम्हा , अग्निवाहक मेष , गरूण सूर्य , तथा समुद्र मंथन आदि विशेष रूप से उल्लेखनीय है । हरिहर का शिरोभाग लगभग §10 §वी शदी की है ।इस समे भगवान शिव का हरिहर रूप बड़े ही कलात्मक ढंग से प्रस्तुत किया गया है । शिर के आधे भाग पर जटाधारी शिव तथा आधे भाग मे भगवान विष्णु का कोरिट मुकुट दर्शाया गया है । जो आकर्षण का केन्द्र बना हुआ है । मायापुर से प्राप्त त्रिमूर्ति मे ब्रम्हा विष्णु , महेश के मिश्रित रूप बड़े कलात्मक ढंग से दर्शाया गया है । । कुबेर की मूर्ति मे दाहिने हाथ मे सुरा का प्याला लिये हुये बैठे हुये है भावभंगिमा एवंशरीर सौष्ठव की दृष्टि से यह प्रतिमा अत्यन्त आकर्षक है । । कांगड़ी ग्राम जिला विजनौर के एक भूमिगत मन्दिर से प्राप्त सिंहवाहिनी दुर्गा की प्रतिमा इस क्षेत्रको तत्कालीन कला का परिचायक है । इसमे विभिन्न आयुधो से युक्त देवी दुर्गा को सिंह पर आसीन दिखाया गया है । सम्पूर्णप्रतिमा लगभग §40 ×30 सेमी० § की एक ही पत्थर को काटकर बनायी गयी है । । मायापुर से प्राप्त §8वरी शदी § की अग्निवाहक मेष की प्रतिमा आकर्षण केन्द्र बना हुआ है । मथुरा के लाल पत्थर से निर्मित इस प्रतिमा मे मेष का सवार अग्नि का अंकन अत्यन्त सजीव है लेकिन दुर्भाग्य से यह प्रतिमा खन्डित हो गयी है । इसके अतिरिक्त शिव पार्वती की प्रतिमा, मुकुटधारी विष्णु ,एवं समुद्र मंथन पाषाण फलक आकर्षण का केन्द्र बना हुआ है । इस पाषाण फलक को 18 §1982 §मे लन्दन मे आयोजित भारतउत्सव मे प्रदर्शित की गयी थी । कन्नौज से प्राप्त बोधिसत्व

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

कर प्रतिम ा में बुद्ध को प्रतिको से युक्त अभय मुद्रा मे दर्शाया गया है । पैरो मे चक्र के चिन्ह .है इसमे शिल्पकार ने सौन्र्य प्रदर्शन के साथ साथ आध्यात्मिक पक्ष का बड़ा ही सजीव अंकन कि या गया है जिसमे बुद्ध का देवत्व स्पष्ट परिलक्षित होता है । प्रभामंडल के अन्दर अर्धचन्द्रकार रूप लिये हुये सातवी शती इ० की ऐतिहासिक दृष्टिय अत्यन्त महत्वपुर्ण है जिस पर ब्राम्ही लिपि मे (ये धर्म हेतु प्रभवा)लिखा हुआ है ।इसके अतिरिक्त भगवान बुद्धको अभय मुद्रा की प्रतिमा ,यक्षप्रतिमा , बोधिसत्व प्रतिमा , शक्तिकोगारत नारी (कुषाणकाल) आलिंगन मुद्रा मे शिव पार्वती ((7 -8वी शदी)इसके अतिरिक्तदेव प्रतिमा यक्षप्रतिमा (गुप्त काल) त तथा सारनाथ शैली को बूद्धको प्रतिमा कला की सुन्दर नमूना है । शीर्षहीन महावी को प्रतिमा (30 x 220 सेमी०) महावीर पद्मासन मे बैठे इये है । नीचे आसन पर उनके लाछन सिंह की आकृति बनी है । आम्रमोत से एक प्राचीन मन्दिर का शिखर प्राप्त हुआ है यह भी अन्य तीर्थंकरो की प्रतिमा पदमासन मे उत्कीर्ण है । पार्श्व मे तथा उपर लाछनो सहित अन्य तीर्थंकर , युगल प्रतिमये तथा चारणधारी यक्ष उत्कीर्ण किये गये है ।

अन्त मे कहा जा सकता है कि हरिद्वार क्षेत्र से प्राप्त (8 -10 वी शदी को) की प्रतिमाओ पर प्रतिहार कालीन कला का प्रभाव है । प्रतिहार युग मे यहा परम पावन गंगा की उपत्यका मे कतिपय देवभवनो का , प्राचीन भारतीय स्थापत्य एव शिल्प मे स्वतन्त्र अस्तित्व रहा होगा । 000

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

मुद्रा कक्ष एवं हिमालय दर्शन चित्र विथिका

धातु के एक निश्चित आकार के टुकड़े जिसका भार एवं मूल्य की प्रामाणिकता किसी संगठन या सत्ता द्वारा की गयी हो , सिक्के कहलाते है ।

सिक्को का प्रचलन मनुष्य की बदलती हुइ आवश्यकताओ की पूर्ति मे विनिमय की कठिनाइयो का प्रतिफल है । अतएव उत्खनन एवं साहित्यिक प्रमाणो के अनुरूप भारत मे सिक्को का प्रचलन आज से लगभग §2500 वर्ष §पहले हुआ तब से निरन्तर ये प्रसरण मे रहे है । प्राचीन भारतीय इतिहास मे निमार्ण मे सिक्को ने महत्वपूर्ण भूमिका निभायी है । इनसे तत्कालीन राजनीतिक ,सामाजिक ,धार्मि९ तथा आर्थिक दशा का ज्ञान मिलता है । कभी कभी तत्कालीन कला तथा साहित्य पर भी प्रकाश पड़ता है प्राचीन भारतीय सिक्के से इतिहास की जानकारी मिलती है । राजनीतिक परिवर्तन के साथ ये सिक्के विभिन्न नामो से पुकारे गये है जैसे -निष्क ,शतमान , दीनार , मोहर एवं रूपया इत्यादि ।

मुद्राकक्ष के विषय मे डा० कृष्ण दत्त वाजपेयी ने लिखा है कि - संग्रहा लय मे सिक्कसे कस हत्र का विभाग दर्शनीय है इस विभाग मे प्रारम्भिक आहत सिक्को से लेकरअर्वाचीन काल तक के सिक्के प्रदर्शित है विदेशी सिक्को का अच्छा संग्रह किया गया है तथा विभिन्न कालो के अनुसार सिक्को को प्रदर्शित किया गया है ।

वर्तमान समय मे पुरातत्व संग्रहालय के मुद्रा कक्ष मे विभिन्न धातुओ के लगभग §4043 § सिक्को संग्रहित किये गये है । सिक्को उत्तर मौर्य काल के ढले सिक्के इन्डोग्रीक राजाओ

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

के ढले सिक्के पश्चिमी क्षत्रपो के सिक्के , कुषाण राजाओ के सिक्के राष्ट्रकूट, योधेय, एवं पान्चाल जनपद के सिक्के कम्पनी सरकार एवं अंग्रेजो शासन के सिक्के, के सिक्के गुप्तकाशी सम्राटो के सिक्के कन्नौज के गुर्जर राजाओ के सिक्के , मध्य कालीन मुगलो के सिक्के तथा स्वतन्त्रा के पुर्व विभिन्न देशी राजाओ के सिक्के अपना विशिष्ट स्थान रखते है ।

यहा गु प्तकालीन स्वर्ण तथा रजत मुद्रायें संग्र होत की गयी है जिनमे समुद्र गुप्त , चन्द्रगुप्त ,कुमार गु प्त , प्रकाशदित्य तथा नरसिंह गुप्त आदि के नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है । इसमे कइ सोने की मुद्राये दुर्लभ है जिन्हे दर्शको हेतु वृहादाकार रूप मे प्रदर्शि त किया गया है जिसे तत्कालीन मुद्रा कला की उत्कृष्टता का परिचय हो सके , इसी उददेश्य से उनके बड़े पलास्टर कास्ट के बनावकर रखे गये है । ऐसे स्वहैम वर्ण के सुन्दर पलास्टर कास्ट निम्न गुप्त सम्राटो के है ।

। वीणावादक समुद्र गुप्त 2सिंहहिन्ता चन्द्रगुप्त द्वितीय , 3 खड्गधारी कुमार गुप्त प्रथम 4 धनुर्धर चन्द्रगुप्त आदि । संग्रहालय मे आहत सिक्को का भी अच्छा संग्रह है । इनकी संख्या लगभग (130) है आहत मुद्राये पुरातात्विक क्षेत्र मे विशेष महत्व रखती है ।

भारत के विभिन्न युगो तथा प्रदेशो और गणतन्त्र मे विलीन तत्कालीन रियासतो तथा शासन खण्डो की मुद्राओ मे कुछ उल्लेखनीय है - इन्दौर , कन्नौज , गोरखपुर ,उदयपुर ,

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

मैसूर, सौराष्ट्र ,गुजरात , बड़ौद , नेपाल , हैदराबाद , जोधपुर , दवास , झासी , मालवा भरतपुर , नवानगर , पोरबन्दर ,नाभा , रतलाम , मालेर, टिहरी ' , भोपाल , टौक बीकानेर , जैसलमेर , पटियाला , चित्रकुट ।

मध्यकालीन भारतीय शासको के सिक्के भी सग्रहित है जिसमे गुलाम वंश ,खिलजी वंश , तथा तुलक वंश आदि है । इस प्रकार से मुस्लिम शासको के कुछ नाम उल्लेखनीय है । जैसे - बलबन , सुल्तान अलाउददीन , शमशुददीन अल्तमश ,गया सुददीन तुलक · मोहम्मद तुगलक इस्लाम शाह , मुबारक शाह , फिरोज शाह , बहलोल शाह , शेरशाह , अकबर , जहागीर आदि के नाम उल्लेखनीय है ।

विश्व के विभिन्न देशो के शासको की प्रचीन काल की मुद्रायें संग्रहालय में प्रदर्शित है । और वे सारे संसार की मुद्रा कला तथा उसके स्वर और वैविध्य को एक ही स्थान पर प्रस्तुत करती है इसमे से कुछ के नाम उल्लेखनीय है --ग्रेटब्रिटेन 2 इंगलैन्ड 3 आस्ट्रेलिया, 4 नीदर लैन्ड 5नार्वे 6 साइप्रस 7 युनान 9 कनाडा 10 पाकिस्तान 11 मलाया 12 मिश्र 13 जापन 14 जर्मनी 15 हालैण्ड 16 कांगो 17 अबीसीनिया 18 मौरिशास 19 लेबनाम 20 चीन आदि ।

इनके अतिरिक्त उन मुद्रदाओ की संख्या भी अधिक है जो भारत मे ब्रिटिश शासन के

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

के समय विदेशी शासको जैसे -विक्टारिया ,एडवर्ड ,जार्ज आदि ने निर्माण कराके प्रचलित

कको थी । ये अधिकतर ताम्र निर्मित है और अनेक मुद्राये बहुत साफ तथा सुंदर दृश्यो मे

युक्त है । ये दर्शकों को भारत पर विदेशी सत्ता का स स्मरण दिलाती है ।

अन्य मुद्राओ के अतिरिक्त वित्तीय सामाग्री के वर्ग मे §करेन्सी § आने वाली

वस्तुये तथा नोट रखे गये है उनके प्रमुख नाम निम्न लिखित है यथा -

इटली ,जापान , रूस , फान्स , हांकांग , युनान ,स्याम , मोरिशास ,अफगानिस्तान ,

जर्मनी , चीन , ब्रिटिश , मलाया , नेपाल आदि ×

संग्रहालय मे डाक टिकटो के संकलन का भी प्रयास किया गया है और इस कक्ष मे भारत और

विदेशो के अनेक प्रकार के टिकट प्रदर्शित किये गये है इनमे संयुक्तराज्य अमेरिका ,युरोप तथा

अफ्रीका के विभिन्न देशो के टिकटो को बड़ी संख्या मे रखा गया है जिनमे कईप्रचीन

तथा दुर्लभ डाकटिकटो के प्रतिनिधिस्वरूप है ।

इसप्रकार संग्रहालय मे मुद्रा ,डाकटिकट तथा नोटो का यह वृहद संग्रह जहां मुद्राशास्त्र

के ज्ञाताओ के लिये शोधकार्य हेतु सहायक है वहां जनसाधारण के लीये भी ज्ञानवर्धक है ।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

हिमालय दर्शन चित्र विथीका 5 ---इस पुरातत्व संग्रहालय के वे विकास की नवीनतम कड़ी कड़ी है -हिमालयदर्शन चित्र विथी । हिमालय पर्वत श्रृंखला सदियो से ही जहा भारतीयो मनिषियो तपस्वियो तथा योगियो की कर्मभुमि के रूप मे सर्वविदित है यह विश्व के जिज्ञासुओ के लिये रहस्य एवं आकर्षण का केन्द्र भी बना रहा है । इसकी महिमा का वर्णन प्राचीन ग्रन्थो मे है । यद्यपि वर्तमान वैज्ञानिक युग मे यातायात की सुविधा के कारण हिमालय पर्वत श्रृंखला के प्राकृतिक सौन्दर्य को देख पानातो सुगम तो हो गया है लेकिन सुलभ नही है । सामान्यजनसाधारण के लिये आज भी कल्पना का विषय बना हुआ है ।

102702

हिमालय दर्शन का प्रारम्भ हरिद्वार से ही होता है ।भारतीय पौराणिक आख्यानो मे भगवान शिव से सम्बन्धित इस स्थान की महिमा काअभुतपूर्व विवरण है । हरिद्वार से भी इस तथ्य की पुष्टि हो जाती है । कि भागीरथी हिमालय की घाटियो से होती हुइ सर्वप्रथम हरिद्वार के मैदानो भागो मे पदार्पण करती है । इसलिये ह रिद्वार को गंगा द्वार भी कहते है । यात्रियो तथा पर्यटको को हिमाच्छादित पर्वत श्रृंखला तथा गंगा उदगम स्थल गोमुख आदि के प्राकृतिक सौन्दर्य की अनुभूति के लिये विश्वविद्यालय के संग्रहालय मे हिमलय के चित्र जनसामान्य हेतु प्रदर्शित कीगयी है। योगगुरू तथा सिद्धहस्त चित्रकार स्वामी सुन्दरानंद जो के सहयोग से और मार्ग दर्शन मे यह चित्रविथिका लगायी गया है ।

स्वामीजी सन्यासी रूप मे वस्तुत: कर्मयोगी ,योग गूरू तथा तपो वनम जी के शिष्य स्वामीजी सिद्धहस्ततथा भागवत प्रेमी होने के साथ साथ अनुभवी प पर्वतारोही भी थे वे §45§ वर्षो से

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

तपोवन कुटी मे निवास करते है यही कुटी उन्हे गुरू जी से विरासत मे प्राप्त हुइ थी ।

60 वर्षीय स्वामी सुन्दरानंद जी का जन्म ग्राम अनंतपुर जिला नेल्लोर आन्ध्र प्रदेश मे हुआ था । बाल्यावस्था मे ही सन्यास लेकर हठयोग साधना द्वारा सिद्धि प्राप्त की है ।योग शिक्षा के अतिरिक्त कुशल पर्वतारोही एवं पर्यटक के रूप मे स्वामी जी , हिमालय के जिन शिखरो को माप चुके है,उनमे जोशिमठ गंगोत्री , कोटेश्वर केदारधाम कुमायु नदी नंदाघाट बलजोरी तथा सिक्किम उल्लेखनीय है ।

स्वमी जी के चित्रो की अनेक प्रदर्शनिया लग चुकी है जिनकी देश की प्रमुख पत्र पत्रिकाओ ने मुक्त कण्ठ से प्रशंसा की है । देश विदेश के चित्रकारो तथा अनेक राष्ट्र नेताओ ने सराहा है ।

दुर्गम एवं हिमाच्छादित पर्वत श्रृंखला तक हर व्यक्ति पहुचकर प्राकृतिक सौन्र्य का आनंद नही उठा सकता है इस बात को ध्यान मे रखते हुये ही स्वामीजी के विशाल संकलन मे से कुछ उत्कृष्ट चित्रो को पुरातत्व संग्रहालय मे हिमालय दर्शन चित्र विथिका के रूपे नियोजित की गयी है । इस चित्र वीथी मे केदार नाथ , गंगोत्री तथा शेषनाग , मानापर्वत शिखर , ब्रम्हकमल , मन्दापर्वत शिखर , ओकार ब्रम्ह , केदार डूम एवं कालिन्दी सेतकुन्ता आदि पर्वत श्रृंखलाओ तथा बहुत से विभिन्न रंगीन चित्रो को प्रदर्शित किया गया है । अत: यह मौन चित्रशाला भारतीय वैज्ञानिक आख्यानो की इस विशाल श्रृंखला की महिमा का बखान भी करती है ।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

चित्र कला कक्ष

चित्र कला कक्ष विशेष रूप से समृद्धि है । संगहालय विभिन्न प्रकार की कलाकृत्यो से सुसज्जित है जो दर्शको को सहज ही आकार्षित कर लेते है चित्र तथा कला के अन्य नमूने आर्ट एण्ड पेन्टिगस को विभिन्न दृष्टिकोणो से वर्गीकृत करके प्रदर्शित कि या गया है ।

संग्रहालय मे अनेक प्रकार के चित्र प्रदर्शित किये गये है जिनमे कइ मनोहारी दृश्यो का अंकन कि या गया है ।

राजपूत शैली -- भारतीय इतिहास मे राजपूत शैली का अपना स्वंस्त्र अस्तित्व रहा है यद्यपि इसका आविर्भाव 14 -15 वी शती मे रराजस्थान से प्रारम्भ हुआ किन्तु कइ कइ शताब्दियो तक भारत के विभिन्न प्रदेशो मे भारतीय चित्रकला को प्रेरणा देने तथा उसकी परम्परा को अक्षुण्य बनाये रखने के लिये राजपूत शैली का विशेष योगदान रहा ह है । राजपूत शैली के अनेक केन्द्र रहे है जिनमे ग्वालियर अंबर , मेवाड़ बीकानेर जयपुर आदि है राजपूत शैली के अधिकतर चित्र कृष्ण भक्ति विषयक वैष्वण धर्म के है । इय संगहसलय मे राजपूत शैली के निम्नलिखित चित्र प्रदर्शित किये गये है ।

रास लीला ,श्रीकृष्णलीला , धेनु वराना , शेषशायी विष्णु , वासुदेव काश्र- श्रीकृष्ण सहित गोकुल गमन का चित्र दर्शको अपने ओर आकर्षित कर लेता है

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

मृण्मूर्ति संग्रह कक्ष

गुरूकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के संग्रहालय के विभिन्न संग्रहो मे मृण मुर्तियो का संग्रह विशेषरूप से उल्लेखनीय है । अनेक स्थानो से प्राप्त मृण्मूर्तियो की संख्या लगभग (500) है ।स्थानिक महत्ता के आधार पर यह संकलन मथुरा ,कौशाम्बी एवं विदिशा से प्राप्त मृण्मूर्तियो का है । अगनइखेड़ा ,शाहाबाद ,आवला बरेली,और इमलीखेड़ा व सरसावा से भी कुछ मूर्तियो को संग्रहित किया गया है ।

अधिकतर मूर्तिया क्रय की गयी है । विदिशा से प्राप्त मृण्मूर्तिया' प्रो० कृष्टदत्तवाजपेयी के सौजन्य से उपलब्ध हुइ है ।स्तरीय कालक्रम के अभाव मे शैलो के आधार पर ही इनका विभाजन किया गया है ।

संग्रहालय मे मौर्यकालीन भूरे रंग की लगभग (25) मानवीय एवं कुछ पशु की मूर्तिया है । कुछ मूर्तिया प्रागमौर्यकालीन कही जा सकती है । अधिकतर मूर्तियो के निर्माण मे सांचे का उपयोग कियागया है । मात्र हाथ से बनी तीन मूर्तिया है । मुखभाग मे मिटटी मे ही उठाकर नाक एवं दबे हिस्से मे आंख बनायी गयी है । कानो मे भारी कुण्डल एवं गले मे हार अलग से चिपकाया गया है । छोटे छोटे विन्दुओ से मूर्ति को सजाया गया है ।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

पशु आकृतियों मे घोड़ा हाथी एवं कुत्ता है । भुरे रंग की पशु मे हरथी का छोटे

विन्दुओ से सजाया गया है ।

शुंगकालीन परम्परा मे साचे से बने मृणफलको मे मौर्यकालीन फुलो की सज्जा केश विन्यास

के साथ एवं भारी अलंकरण दर्शाये गये है । विशेष रूप से उल्लेखनीय एक बैलगाड़ी का भाग

जिसमे कुछ खाने योग्य वस्तु रखी गयी है । यह तत्कालीन यातायात व्यवस्था को दर्शाती

है ।

कुषाणकालीन मूर्तियो मे पैरो पर बैठी हुइ लक्ष्मी की मूर्ति है । दोनो हाथ मे पुष्प है ।

कुबेर की प्रतिमा भी यक्षो की परम्परा की उत्कृष्ट कृति है ।

गुप्त कालीन मृणमूर्तियो का अच्छा संग्रह संग्रहालय मे है जिसमे त्रिभागीय विभिन्न केश

सज्जा दर्शनीय है । कुछ मृणमूर्तिया साचे मे बनयी गयी है

इस प्रकार भारतीय मृणमूर्ति कला के लगभग सभी क्षेत्रो एवं कालो की मुर्तियो का

संकलन संग्रहालय मे दर्शको हेतु किया गया है ।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

अष्ट धातु प्रतिमा कक्ष

संग्रहालय मे अष्ट ण धातू से निर्मित प्रतिमाओ का छोटा सा संग्रह जनसामान्य के लिये रखा गया है । संग्रहालय मे बौद्ध एवं जैन तथा हिन्दु धर्म से संबंधित देवी प्रतिमाओ एवंविविध प्रकार के पशु पक्षियो का नियोजन किया गया है । जिनमे श्रीदेवी (दक्षिण भारतीय शैली) कमल हस्ता भूदेवी , चतुर्भुज विष्णुप्रतिमा, पुस्प धारिणी , स्थानक देवी , शिव भक्त , सरस्वती प्रतिमा , हनुमान , भैरव की प्रतिमाये कला के श्रेष्ठ उदाहरण है । इनके अतिरिक्त कृष्ण का बालक रूप बाल कृष्ण मेद खेलते हुये , कालियामर्दन की प्रतिमाओ मे दर्शको मे विशेष रुचि दिखायी देती है । क्षीराज गरुण , महिसासुर मर्दनी उ० भारतीय शैली , अश्व बाराह सिंहा , शिकारी कुत्ता ,हिरण ,मछली , नंदी , अप्सरो की प्रतिमाओमे दर्शको मे रुचि दिखायी देती है । हाथी , उट गिरिसिंह ,गाय बछडा मयूर मयूरी ,काजल पात्र ,सिंहासन , सर्वछत्रावली , पठिका , उष्मभावक आदि इनके अतिरिक्त दीपधारिणी , छत्रधारी , खड्गधारी योद्धा की प्रतिमाये आकर्षण का केन्द्र

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

विन्दू बनी हुई है । तथा बुद्ध की ध्यान मुद्रा एवं अभय मुद्रामूर्तियां , बौद्धतांत्रिक, देवी प्रतिमा , बोधिसत्व आदि विशेष रूप से दर्शनीय है । जिसमे पीतल से बनी हुइ बुद्ध की प्रतिमा अत्यन्त आकर्षक है । घुंघराले बाल तथा वस्त्र धारण किये हुये बुद्ध भु-स्पर्श मुद्रा मे दशाये गये है । आसन पर स्वास्तिक चिन्ह अंकित है ।

अष्ट धातु कक्ष का अधिकांश संग्रह शान्ति विजय कम्पनी दिल्ली द्वारा संग्रहालय को प्राप्त हुइ है ।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

अस्त्र शस्त्र अनुभाग

प्रागैतिहासिक काल मे जब मानव को अपने अस्तित्व का बोध नहीं हुआ लगभग उसी समय से उसने अपने जीवन की सुरक्षा के लिये अस्त्र शस्त्र का प्रयोग आरम्भ करना किया होगा । पाषाण काल मे मानव के विविध हथियार और अन्य उपकरण पाषाण निर्मित थे । जैसे जैसे समय के विकास क्रम एवं उसके अस्त्र शस्त्र भी उन्नशील बनने लगे ताम्रकाल मे ताबे के और जब लोहे का ज्ञान हुआ तो हथियार लोहे के बनने लगे । संग्रहालय मे अस्त्र शस्त्र का छोटा संग्रह जनसामान्य के लिये प्रदर्शित किया गया है । भारत सरकार से प्राप्त संग्रह मे ब्रिटिश तोप , बन्दूके एवं भारतीय परम्परागत युद्ध के हथियारो का संग्रह प्रदर्शित है जिसमे दर्शको की विशेष रूचि दिखायी देती है । धनुष बाण , अनेक प्रकार के तीर फलक , तलवारे , ढाल ,हाथी के पीठ से चलायी जाने वाली छोटी तोप एवं तोडीदार बन्दूक आदि विशेषरूप से आकर्षण का केन्द्र बना हुआ है ।

युद्ध बजाया जाने वला रणसिंगा एवं तुरही मे भी दर्शको मे विशेष रूचि दिखाई देती है । 000

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

पाण्डु लिपि संग्रह कक्ष

जहां संग्रहालय के विभिन्न कक्षो मे विभिन्न वस्तुओ का संग्रह है ,वहां हस्तलिखित ग्रन्थो का भी अच्छा संकलन किया गया है । इसके अन्तर्गतअनेक ग्रन्थ अपनी प्राचीनता तथा भाषा दृष्टिकोण मे अत्यधिक महत्वपुर्ण है ।इस संग्रह मे विभिन्न धर्मों को प्रतिपादित करने वाली पाण्ड़लिपियो का संग्रह करने का प्रयास किया गया है । इन ग्रन्थो को इनके समस्त परिचय सहित रखा गया है जिससे न केवल दर्शक अपितु शोधार्थी भी लाभान्वित होते है ।

102702

हिन्दू धर्म के अनेक पवित्र ग्रन्थो मे वाल्मीक द्वारा रचित (रामायण) की कई प्राचीन प्रतियां सटीक तथा फारसी मे लिखित संग्रहित है । इनमे से पंडित विश्वनाथ इशापुर वाले द्वारा लिखित (अयोध्या काण्ड) विशेष महत्वपुर्ण है ।

संस्कृत भाषा मे लिखे गये इस ग्रन्थ का आकार (9×8) है ।

श्रीमदभगवतगीता की अनेक प्रतियो को प्रदर्शित किया गया है जिनमे से गुरूमुखी मे लिखित छोटे आकार (3·5 ×2) की गीता , परम गीता तथा गीता आदि संग्रहालय मे जनसामान्य के लिये प्रदर्शित किया गया है ।

पुस्तकालय
गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

काश्मीरी लिपि मे लिखित 7§प्रार्थना पुस्तक § भाषा को दृष्टि से अत्यन्त

महत्व पुर्ण पुस्तक है । तथा जौनसारी भाषा मे लिखित § तन्त्र मन्त्र पुस्तक §

जिसका आकार §7 x 4·5 § है ।

बंगला हस्तलिपियो को संगहालय मे अच्छा संग्रहाल य मे रखा गया है ।इनमे §12 x45 " §

के आकार वाली देवी स्त्रोत तथा §15 x3" §के आकार वाली §मनुसंहिता §

विशेषरूप से दर्शनीय है

संस्कृत भाषा के ग्रन्थो की सूची मे §ब्रम्हसुत्र § नामक पाण्डुलिपि ,इसी के साथ

स्त्रोत रत्नाकर नामक ग्रन्थ है । पाण्डुलिपियो के संग्रह मे प्राचीन काल मे लेखन हेतु

प्रयुक्त होने वाले कागजो का भी संकलन ज्ञानवर्धक तथा मनोरन्जन का विषय है ।

इनमे भोजपत्र तथा ताड़पत्र मुख्य है इसी मे ताणात्र पर उडिया भाषा मे लिखित

§तूलवीणा§ नामक ग्रन्थ अपना विशिष्ट स्थान बनाये हुए है ।

यह सिक्ख धर्म के पवित्र साहित्य मे श्रीगरूग्रन्थ साहिब को बड़े आकार की

प्रतियां संग्रहालय मे दर्शको हेतु प्रदर्शित की गयी है ।

हिन्दू धर्म तथा सिक्खधर्म के अतिरिक्त मुस्लिम धर्म के पवित्र ग्रन्थो को भी

संगहालय मे संग्रहीत किया गया है इनमे सम्राट औरंगजेब द्वारा हस्त लिखित

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

- § कुरानकारीफ § के मूल पृष्ठो के चित्र सहित मुद्रित हिन्दी अनुवाद

को प्रतिया संगृहित है । इसी श्रेणी मे 7§ कुरान मजीद § भी ऐसा ही साहित्य है ।जो मुस्लिम धर्म को हिंदी भाषियो मे प्रचार करने तथा तत्कालीन धार्मिक स्थिति कसे रूबरू कातस है इसके अतिरिक्त § फारसी गुलिस्ता § की कइ प्रतिया प्राचीन हस्त लिखित ग्रन्थो मे विशेष रूप से उल्लेखनीय है ।

संस्कृत, हिन्दी, उर्दु , ब्रगला , तिब्बती त था पंजाबी आदि भाषाओ और लिपियो की हस्त लिखित पोथियो को शीशो के शो केश मे यस य सुन्दर ढंग से प्रदर्शित किया गया है

इस प्रकार संग्रहालय मे उपयुर्क्त संग्रह सहित § 200 § पाण्डुलिपियो का विशाल संग्रह है जो संस्कृत तथा अन्य भारतीय भाषाओ मे है।अधिकांश पाण्डुलि को पाण्डुलिपि कक्ष मे प्रदर्शित किया गया है ।

0

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

नृतत्व शास्त्र से सम्बन्धित सामाग्री

भारत के विभिन्न क्षेत्रो के निवासियो की मुखाकृतियो का पलास्टर कास्ट के नमूने संग्रहित है । इन मुखाकृतियो भावभगिमा बड़ी सुन्दर और सजीव है ।

जो निम्न लिखित है ।

गुजराती नारी ।

जौन सारी नर नारी ।

बेगा नर नारी ।

कैडर आदिवासी नर ।

उगी नर ।

संथाल नर ।

मद्रासी नर ।

बंगाली नर नारी ।

उड़िया नर नारी ,वेबुनर ।

नागा नर एवं लेवबा नर ।

बिहारी नर , मालवायो नर नारी ,उत्तर प्रदेशीय नर नारी ।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

वर्तमान पद एवं कार्यरत अधिकारीगण तथा कर्मचारी

1 निदेशक ------- डा0 श्यामनारायण सिंह

§ 2§ क्यूरेटर ..... श्री सूर्यकान्त श्रीवास्तव

§ 3§ सहायक क्यूरेटर .....श्री सुक्खोर सिंह

§4§ संग्रहालय सहायक .....श्री अनिल कुमार सिंह

§5§ संग्रहालय लिपिक ..... श्री अरविन्द कुमार

§6§ गैलरी अटैन्डेन्ट .....श्री रमेशलाल

§7§ ,,,, ... श्री ओमप्रकाश

§8§ ,, ,, ...श्री शिवामौर्य

§9§ माली .....रामजीत शाहू ।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

सन्दर्भ ग्रन्थावली

---

§ 1 § प्रहालाद पत्रिका

§ 2 § पुरातत्व संग्रहालय § परिचय पुस्तिका §

§ 3 § संग्रहालय मार्गदर्शिका

§ 4 § संग्रहालय अनुशीलन

§ 5 § हिमालय दर्शन फोटो परिचय पुस्तिका

....

Seen
B.M.L
12/5/97

Copy
12/5

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

मातृदेवी: सिन्धु सभ्यता कालीन मृण्मूर्ति,
मोहनजोदड़ो: ५000 ई. पू.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

अमृतसर कांग्रेस अधिवेशन (१९१९) का चित्रः कुर्सियों पर बैठे हुए महानुभावों में श्री मोतीलाल नेहरु (बांये से तीसरे), स्वामी श्रद्धानन्द जी, श्रीमती एनीबेसेंट तथा पंडित मदन मोहन मालवीय

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

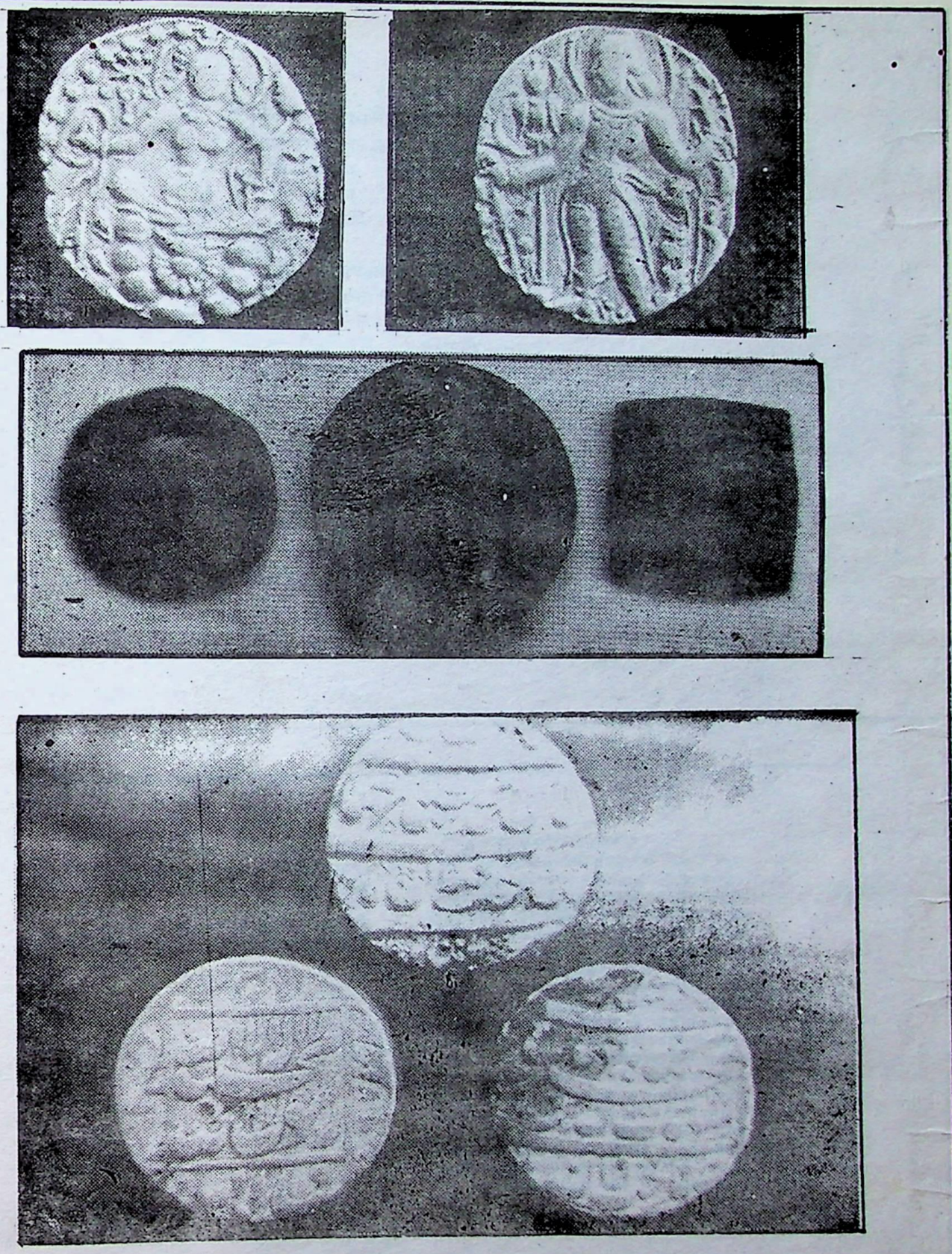

स्वर्ण एवं ताम्र मुद्राः गुप्तकाल, रजत मुद्राः मुगल काल ताम्र मुद्राः इण्डाग्रीक काल

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

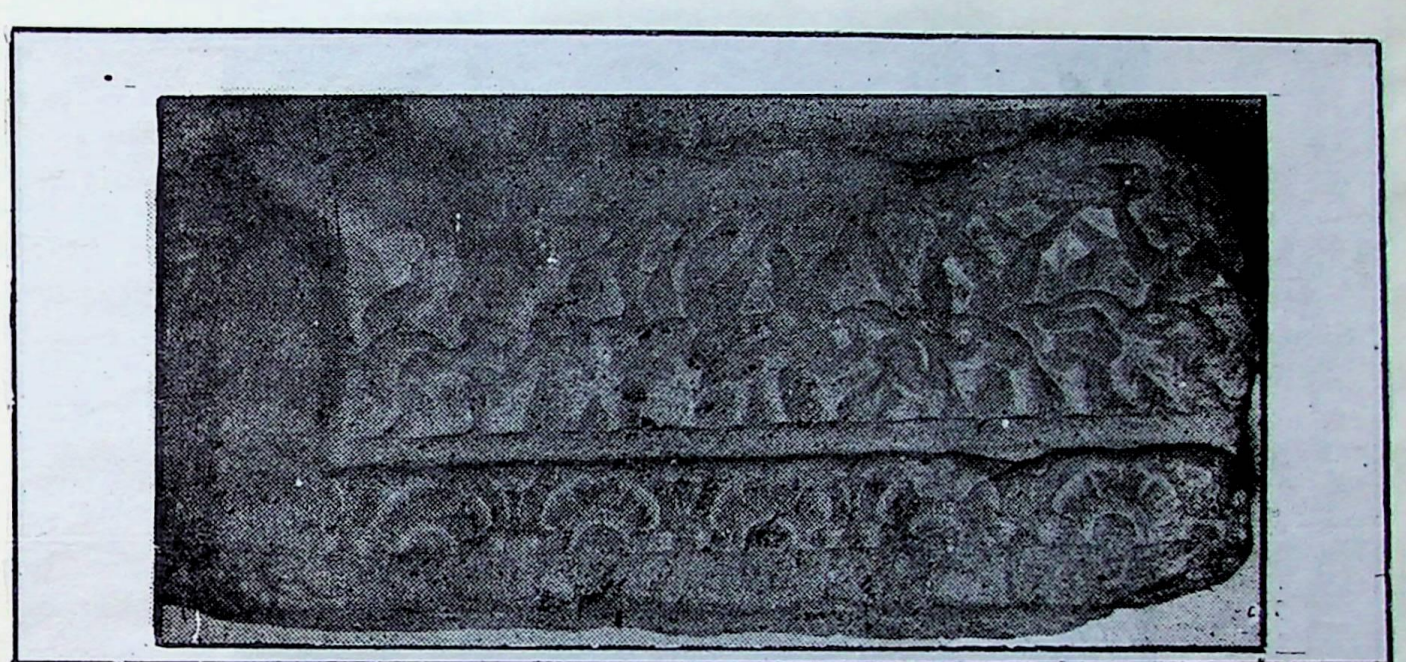

समुद्रमन्थनः पाषाण फलक, सुल्तानपुर झीबारेड़ी ग्राम
१०वीं शताब्दी (पूर्वार्ध

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

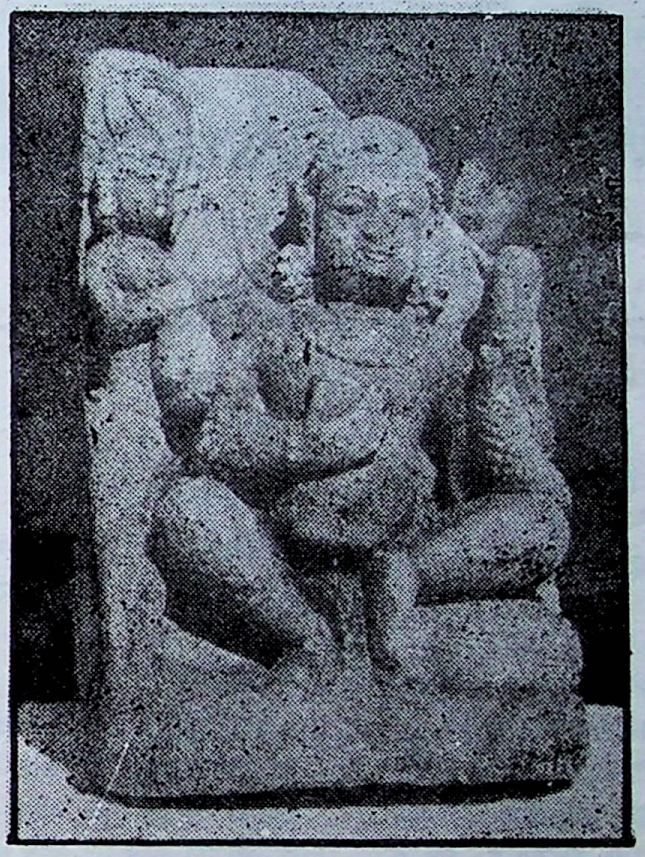

गासवपायी कुबेर: कांगड़ी ग्राम, १०वीं शताब्दी (पूर्वार्ध)

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

मकरवाहिनी-गंगा: कांस्य कला, १६वीं शताब्दी (पूर्वार्ध)

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

102702

पुस्तकालय
पुस्तकालय
ड़ा विश्वविद्यालय

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA